मन की तीज

कहानी

वीना श्रीवास्तव

सी-201, श्रीराम गार्डेन, कांके रोड, रिलायंस स्मार्ट के सामने
रांची- 834008, झारखंड, मो. 9771431900

'शेखर हम कब तक यूं ही पार्क का कोना ढूंढते रहेंगे या रेस्त्रां के केबिन में बैठते रहेंगे? क्या मैं कभी सबके सामने तुम्हारा हाथ पकड़कर नहीं चल पाऊंगी?' शेखर के कंधे पर सिर टिकाए हुए सरगम ने कहा।

'अरे, सरगम जी किसने मना किया है। ये लो मेरा हाथ और बताओ कहां चलना है'। शेखर ने अपना हाथ सरगम की ओर बढ़ाते हुए कहा।

'मजाक छोड़ो। कभी तो गंभीर हुआ करो।' सरगम ने नाराज होते हुए कहा। उसने शेखर के कंधे से अपना सिर हटा लिया।

'अरे। मेरी प्यारी सरू तुम्हें क्या लगता है मैं गंभीर नहीं। पूरी गंभीरता से कह रहा हूं, पकड़ो हाथ और बताओ कहां चलना है और ये क्या तुमने मेरे कांधे से सिर क्यों हटा लिया। अब इसमें सिर का क्या दोष, उसे क्यों सजा दे रही हो, बेचारा सही जगह पर टिका था और जगह ने भी सही चीज को सहारा दिया था और तुम विलेन कब से बन गईं। प्राण चचा तो कबके स्वर्ग सिधार गए तो यहां कहां से आ गए।' शेखर ने सरगम को चिढ़ाते हुए कहा।

सरगम ने डबडबाई आंखों से देखते हुए कहा -'तुम तभी सीरियस होगे, जब मुझे किसी और के पल्ले बांध दिया जाएगा। तब तुम्हारी हंसी-मजाक की आदत जाएगी। देखना जीवन भर रोते रहोगे। तभी तुम्हारी आंखें खुलेंगी जब मैं किसी और की पत्नी बन जाऊंगी।

इस पर नाराज होते हुए सरगम ने कहा 'जाओ, मैं तुमसे बात नहीं करती'।

'अच्छा... तो किससे बात करोगी मेरी मैना ?' शेखर ने उसका चेहरा अपनी ओर घुमाते हुए कहा।

सरगम ने डबडबाई आंखों से देखते हुए कहा - 'तुम तभी सीरियस होगे, जब मुझे किसी और के पल्ले बांध दिया जाएगा। तब तुम्हारी हंसी-मजाक की आदत जाएगी। देखना जीवन भर रोते रहोगे। तभी तुम्हारी आंखें खुलेंगी जब मैं किसी और की पत्नी बन जाऊंगी। तुम्हें मुझसे शादी नहीं करनी तो बता दो, लगता है यूं ही टाइम पास कर रहे हो। अगर ऐसा है तो अपने आंसुओं को छलकने नहीं दूंगी बल्कि जीवन भर इन्हीं आंसुओं से आपनी यादें साफ करते रहूंगी। अच्छा ही होगा. तुम्हारा क्या जाएगा, कोई और मिल जाएगी तो सरगम को भूल जाओगे। वैसे भी सात सुरों की कहानी इतनी भी बड़ी नहीं कि भूली न जा सके। बस खत्म सरगम।'

शेखर ने गुस्सा होते हुए कहा- 'हो गया खत्म? या कुछ और भी बाकी है'। फिर डांटते हुए कहा 'खबरदार, अगर आगे से ऐसी बात कही। जान से मार दूंगा। मेरे जीवन में कोई और इस जनम में तो क्या हजारों-हजारों जनम भी नहीं आएगी। मुझे केवल सरगम चाहिए और कोई नहीं, समझीं? मेरी जान, हंसने का मतलब ये नहीं कि मैं तुम्हें चाहता नहीं। तुम्हें इतना चाहता हूं कि तुम भी खुद को उतना नहीं चाहती होगी। कोई भी किसी को नहीं चाह सकता। तुम कहीं और शादी कर भी लोगी तो भी शेखर का वादा है कि वो इस जनम तो क्या किसी भी जनम में शादी करेगा तो सिर्फ और सिर्फ सरगम से।'

सरगम ने खुश होते हुए कहा 'अच्छा...!! सरगम के होने वाले दूल्हे मियां। शादी तो तब होगी जब आप घरवालों से मेरा हाथ मांगेंगे। मेरे घरवाले नहीं जाएंगे तुमसे बात करने।' सरगम ने शेखर को चिढ़ाते हुए कहा।

'मेरी मैना, बस दो महीने बाद मेरा इंटरव्यू है। वो हो जाए और मुझे पक्का यकीन है कि इस बार मेरा सेलेक्शन जरूर हो जाएगा।'

'जानते हो दो साल निकल गए। इस बार मांजी ने जिद ठान ली है कि किसी भी हाल में इसी साल मेरी शादी करवा देंगी। तुम तो जानते हो न, हर नारी को अपनी जाई संतान से ही मोह होता है। जिसने मुझे जनम दिया वो तो रही नहीं, ये मां तो वैसे भी मुझे नहीं चाहती या यूं कहूं कि मुझे पसंद